फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें—
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 325 1/- जुलाई 2015

कब्जे तोड़ता, ढक्कनें उछालता जीवन

(क)

लाखों-करोड़ों में औरतें जीवन की नई शैली ढूँढ रही हैं, और नई शैलियों में ढाली भी जा रही हैं। अनेकों प्रकार के प्रयोग, नये जोड़, नये रिश्ते, अनेकों इनकार चक्रवर्ती तूफान के रूप में विद्यमान हैं।

ऐसे में कोई इसे भयंकर, खतरनाक चुनौती के रूप में पेश करे और जिद करे कि औरत को परिवार की ही चौखट में देखा जाये, तो उसे क्या कहेंगे ?

औरतें, बच्ची से वृद्धा तक, नई भाषा, नई परिभाषाओं में अपने को व्यक्त कर रही हैं। इसे कैसे प्रस्तुत करेंगे?

उन अनाम क्षणों और रेखाओं-धाराओं को चिन्हित कैसे करेंगे जो आसपास को अपरिचित बना देते हैं, पर अन्य प्रवाहों को प्रत्यक्ष कर देते हैं?

(ख)

हर रोज फैक्ट्री में प्रवेश करते समय एक हजार मजदूर नौकरी से बरखास्त अपने दो साथियों को गेट के बाहर खड़ा देखते। दूधनाथ और रामप्रसाद डिसमिस किये जाने के खिलाफ कोर्ट-कचहरी नहीं गये। गेट के बाहर प्रतिदिन खड़े हो कर काम पर जाते अपने साथियों से दुआ-सलाम करते रहे। फैक्ट्री के अन्दर उन्हें ले कर वाद-विवाद बढते रहे। बढती चर्चाओं के भंवर को थामने के लिये पन्द्रह दिन में मैनेजमेन्ट ने दूधनाथ और रामप्रसाद को ड्युटी पर वापस ले लिया।

ये बात, यह छवि, ये घटना बातचीत में तब उभरी जब इस सवाल पर चर्चा हो रही थी कि — आपके जीवन में कौन से क्षण हैं जिन्होंने जीवन को देखने और समझने की राहें मोड़ दी?

रूटीन के बहाव में खलल पैदा करने वाले क्षण निरन्तर उत्पन्न होते रहते हैं। हम में और हमारे आसपास जो प्रकाशमान और जादुई है, यह क्षण उसका बोध हमें कराते रहते हैं।

(ग)

दायरों के पार जाना सामान्य है। जीवन में इतनी बहुतायत है कि उसे सीमाओं में बाँधना नामुकिन है। यह बहुतायतता तरह-तरह से खुद को अभिव्यक्त कर रही है, विभिन्न अखाड़ों को नाकारा साबित कर रही है।

"पार जाने" का बोध सब को होता रहता है। तभी एक फैक्ट्री के बीस मजदूर अपनी बातों को गत्तों पर लिख कर हजारों के बीच जाते हैं। तभी नौकरी की सीमा के पार जा कर यूनान में युवक-युवतियाँ सार्वजनिक रसोईघर, सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्र, वृद्धों की देखभाल, और सार्वजनिक उल्लास के लिये स्थानों की रचना कर रहे हैं।

किस तरह की तैयारी में रहें ?

क्या सवाल पूछें ?

कैसे प्रयोग करें ?

— ताकि जीवन की बहुतायतता और दायरों के पार जाने की सामान्यता के हम प्रसार-बिन्दू बने रहें। हम अवसर बनें। ■

असंगत बन गये है

कानूनों का उल्लंघन सामान्य बन गया है। कानूनों का पालन अपवाद बन गया है। कानूनों का कार्य नहीं कर पाना, कानूनों का नाकारा हो जाना, कानूनों का असंगत बन जाना एक लक्षण है। यह इस बात का लक्षण है कि जिन सामाजिक सम्बन्धों के आधार पर कानून खड़े हैं वे सामाजिक सम्बन्ध कार्य नहीं कर पा रहे, वे सामाजिक सम्बन्ध नाकारा हो गये हैं, वे सामाजिक सम्बन्ध असंगत हो गये हैं। सामाजिक सम्बन्ध और उसके कानूनों का असंगत होना नये सामाजिक सम्बन्ध की आवश्यकता की अभिव्यक्ति भी है, नये सामाजिक गठन की पूर्ववेला भी है। ऊँच-नीच, मण्डी-मुद्रा, खरीद-बिक्री, हानि-लाभ, रुपये-पैसे, मजदूरी-प्रथा वाले सामाजिक सम्बन्ध की जगह क्या ? विश्व के सात अरब लोगों में इस पर मन्थन हो रहा है। हमें लगता है कि फैक्ट्री मजदूरों की इस सामाजिक मंथन में उल्लेखनीय भूमिका है। इस सन्दर्भ में आदान-प्रदान बढाने में मजदूर समाचार योगदान देने के लिये फैक्ट्री मजदूरों की बातों को प्रकाशित करता है।

एफ सी सी मजदूर : ''प्लॉट 5 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री के नाम से रीको शब्द इस वर्ष जनवरी में हटाया है। यहाँ 2009 में यूनियन बनवाने के लिये ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों ने भी 1000-1000 रुपये दिये थे। यूनियन बनने के बाद अस्थाई मजदूरों की दिक्कतें और बढी हैं। पहले हर छठे महीने ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूरों में से 10-12 को कम्पनी स्थाई करती थी। तीन-चार वर्ष से लगातार काम कर रहे स्थाई हो जाते थे। यूनियन ने वर्ष में 25 को स्थाई करने का समझौता किया और इन 6 वर्ष में 150 की बजाय 50 ही स्थाई किये गये हैं। अब करीब 300 स्थाई और 800 अस्थाई मजदूर हैं, आठ-दस वर्ष से लगातार काम कर रहे भी अस्थाई हैं। जनवरी में सब की वार्षिक वेतन वृद्धि होती थी — चार वर्ष से अस्थाई मजदूरों की तनखा में एक पैसा नहीं बढाया है जबकि स्थाई के वेतन में इस दौरान 12,000 रुपये की वृद्धि हुई है। महीने में 2 घण्टे के 2 गेट पास अस्थाई मजदूरों को मिलते थे, डेढ वर्ष से बन्द कर दिये हैं। अस्थाई की 2 सी एल छुट्टी पास हो जाती थी, वो बन्द कर दी गई हैं। फैक्ट्री में जो हार्ड वर्क है वह अस्थाई वरकर करते हैं, 8 घण्टे खड़े-खड़े करते हैं। अस्थाई ऑपरेटरों को हैल्पर ग्रेड देते हैं, बेसिक 5813 रुपये है। यह तो 50 से 150 घण्टे ओवर टाइम जिसका भुगतान दुगुनी दर से है; प्रोडक्शन इन्सेन्टिव 5000-5500 रुपये; उपस्थिति भत्ता 500 रुपये ; शिफ्ट अलाउन्स 20-25 रुपये प्रतिदिन ; मकान भत्ता 450 रुपये पुरानों को (नये को 650 रुपये) हैं कि खींच-खाँच रहे हैं।''

पैनेक्स ओवरसीज श्रमिक : '' प्लॉट बी-63 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में कार्य करते 500 मजदूरों में 14 सैम्पलिंग टेलरों की ही ई एस आई व पी एफ। दस वर्ष से पैसे काट रहे हैं पर ई एस आई कार्ड नहीं दिये और पी एफ जमा नहीं किया। सैम्पलिंग टेलरों में हलचल बढी तो मैनेजमेन्ट ने अप्रैल से उन्हें खाली बैठाना शुरू किया। गिरीनगर में एक यूनियन लीडर के पास 12 जून को सैम्पलिंग टेलर गये। नेता के कहने पर श्रम निरीक्षक 18 जून को जाँच के लिये फैक्ट्री पहुँचा — यह बात मैनेजमेन्ट को फोन द्वारा पहले बता दी। फैक्ट्री के पिछले गेट से 450 मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने बाहर निकाल दिया। श्रम निरीक्षक को फैक्ट्री में 80 मजदूर ही मिले। लीडर फिर छापा डलवायेगा......''

परफैक्ट मैकेनिकल इन्डस्ट्रीज कामगार : '' 14/1 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 150 स्थाई मजदूर, 70 कैजुअल वरकर, और 42 ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों के लिये विभिन्न रोडवेज की 12 गाड़ी की बॉडी तैयार करना निर्धारित है। यहाँ सेना की बस, बुलेट प्रूफ बॉडी, बैंकों के लिये कैश वैन की बॉडी बनती हैं। रेलवे का भी काम होता है। सुबह 9 से रात 9½ से अगली सुबह 9 के बाद फिर 12 घण्टे की ड्युटी — लगातार 36 घण्टे काम भी हो जाता है। महीने में 80 से 150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। बोनस सिर्फ स्थाई मजदूरों को देते हैं। आठ-नो वर्ष पहले क्रेन ठीक करने चढे इलेक्ट्रीशियन की बिजली के झटके से मृत्यु हो गई। मजदूरों ने एक सप्ताह काम बन्द रखा तब मृत मजदूर के परिवार को कुछ ठीक-सी क्षतिपूर्ति कम्पनी ने दी थी।''

रूप ऑटो वरकर : '' प्लॉट 439-440 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूर और 3 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर वाहनों के स्टीयरिंग शाफ्ट बनाते हैं। स्टाफ में 150 लोग हैं। दो शिफ्टें : सुबह 6½ से साँय 5 तक जिसे रात 9-10 तक बढा देते हैं, और साँय 5 से अगली सुबह 6½ बजे तक। ओवर टाइम 35-36 रुपये प्रति घण्टा। महीने के तीसों दिन काम। रविवार को 10 घण्टे के 460 रुपये। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं।''

दिल्ली मैट्रो मजदूर : '' सरिता विहार-जसोला ओवर ब्रिज के पास दिल्ली मैट्रो सीमेन्ट कास्टिंग स्थल पर 150 मजदूरों और गार्डों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे ड्युटी पर 30-31 दिन के 8000 हजार रुपये देते हैं और वह भी देरी से। मई की तनखा 28 जून तक नहीं दी तो मजदूरों ने हँगामा किया, तब मई की तनखा 30 जून को दी।''

पनेशिया बायोटेक श्रमिक : '' प्लॉट ए-241, 242, 243 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में विश्व स्वास्थ्य संगठन के लिये पोलियो वैक्सीन और बच्चों को 5 बीमारियों वाले इजी 5 इंजेक्शन बनते थे। पुरानी मशीनें कह कर डब्लू एच ओ ने ऐतराज किया। इधर 300 मजदूर कार्यरत थे कि अप्रैल में कम्पनी बोली की यहाँ फैक्ट्री बन्द करेंगे, बद्दी में नई फैक्ट्री में चलो, सर्विस अनुसार 3000, 2000,1000 रुपये वेतन वृद्धि देंगे। मात्र 15 लोग गये हैं, बाकी ने हिसाब लिया, 15 वर्ष वालों को 21 महीने की तनखा।''

मैजेस्टिक कामगार : '' प्लॉट 16 डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-1, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर, एक ठेकेदार के जरिये रखे ई एस आई व पी एफ वाले 40 मजदूर, और 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखे बिना रिकार्ड वाले 200 मजदूर। यह सब जे सी बी की सीट बनाते हैं। सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट, ओवर टाइम सिंगल रेट से।''

एमटेक वरकर : '' प्लॉट 51 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में मई माह में किये ओवर टाइम के पैसे पहली जुलाई तक नहीं दिये तो 2 जुलाई को सुबह 9 बजे ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर फैक्ट्री के अन्दर नहीं गये, गेट पर बैठ गये। मैनेजमेन्ट ने 10 बजे गेट पर आ कर कहा कि 2 बजे पैसे देंगे, तब इन मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश किया। ''

बेस्टन इलेक्ट्रोविजन मजदूर : '' बी-70 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में तनखा 12-14-15 हजार दिखाते हैं पर देते 5-6-7 हजार रुपये हैं। कम्पनी दो रजिस्टर रखती है। छोड़ चुके 10 मजदूरों ने श्रम विभाग में मामले दर्ज कर रखे हैं। जाँच का कम्पनी को पहले ही पता चल जाता है, कई वरकरों को जनरेटर रूम में बन्द कर देते हैं, मई में श्रम निरीक्षक फैक्ट्री आया तब 35 मजदूरों को मैनेजमेन्ट ने बाहर कर दिया था। अधिकारी लोग मैनेजमेन्ट से मिल कर, ले-दे कर चले जाते हैं। ''

ए ए ऑटोटेक श्रमिक : '' प्लॉट 156-157 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की 2 शिफ्ट, रविवार को भी काम, वर्ष में 4 दिन ही छुट्टी। बहुत लम्बी ड्युटी से हुई एक मजदूर की मौत के बाद से 24 घण्टे से ज्यादा नहीं रोकते परन्तु 12 घण्टे बाद अब भी जबरन रोकते हैं। करीब 2000 मजदूरों में 100-150 कम्पनी रोल पर हैं। तीन बड़ी ठेकेदार कम्पनियाँ हैं और उन्होंने 7-8 छोटे ठेकेदारों को भी काम दिया है। हर महीने मजदूरों को मिलते पैसों में 500-700 रुपये की गड़बड़ी करते हैं।''

दिव्या ज्वैलर्स वरकर : '' एक्स-32 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित सोने के आभूषण बनाने वाली फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा रखे 15 मजदूरों की 8 घण्टे की ड्युटी, 25-30-35 हजार रुपये तनखा। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 35 वरकरों की तनखा 10 से 13 हजार रुपये, सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी रोज, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। **(शेष पृष्ठ तीन पर)**

गूँगी बैठक

इम्पीरियल ऑटो इन्डस्ट्रीज मजदूर : '' 80-90 प्रकार के हौज और फ्युअल इंजेक्शन पाइप आदि बनाती कम्पनी की फरीदाबाद में ओल्ड रेलवे स्टेशन के सामने, डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट, प्लॉट 31-32 सैक्टर-27 सी, 13/6 तथा 19/6 मथुरा रोड़, प्लॉट 78-83-94 सैक्टर-25, पृथला (पलवल) में फैक्ट्रियाँ हैं। इम्पीरियल ऑटो की पुणे, साणन्द, कोलकाता, बेंगलुरू, बावल आदि में भी फैक्ट्रियाँ हैं। यहाँ बजाज, जे सी बी, महिन्द्रा, टाटा मोटर, हीरो, यामाहा, होण्डा, टोयोटा, मारुति सुजुकी, ह्युन्दाई, एस्कोर्ट्स, आयशर, टी सी एल, अशोक लेलैण्ड, क्युमिन्स, रेलवे, वायुयानों के पार्ट्स बनते हैं। टैफलोन पाइप के लिये कच्चा माल ताइवान से, नाइलोन ट्युब के लिये दाना अमरीका से आता है। कम्पनी की फरीदाबाद फैक्ट्रियों में मुख्यतः असेम्बली होती है, बना हुआ माल 40-50 वर्कशॉपों से आता है। इम्पीरियल ऑटो की सब फैक्ट्रियों में नब्बे प्रतिशत से ज्यादा मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे गये हैं। नेता-मन्त्री-अफसरों के नाते-रिश्तेदार ठेकेदार कम्पनियों के कर्ता-धर्ता हैं, यूनियन लीडर भी इम्पीरियल ऑटो को मजूदर सप्लाई करते हैं। मैनेजर लोग मजदूरों पर रौब-धमकाने के लिये पुलिस अधिकारियों से सम्बन्धों का सार्वजनिक प्रदर्शन करते हैं। प्रोविडेन्ट फण्ड में गड़बड़ी करना इम्पीरियल ऑटो में आम बात है और ओवर टाइम का भुगतान मात्र 15 रुपये प्रति घण्टा है......

''13/6 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री 2005 में चालू हुई थी। यहाँ एक भी स्थाई मजदूर नहीं है। दस वर्ष से काम कर रहे भी अस्थाई हैं। पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर कार्यरत हैं। यहाँ स्टाफ बहुत है, 150 से ज्यादा लोग हैं और उन में भी अधिकतर को अंगद के रोल पर बताते हैं। सब मजदूरों की तनखा से ई एस आई व पी एफ की राशि काटते हैं पर हर महीने जमा नहीं करते, फण्ड के 2-4-6 महीने के पैसे खा जाते हैं। इस समय महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम है, भुगतान मात्र 15 रुपये प्रति घण्टा — कानून अनुसार 6500 रुपये बनते हैं जबकि देते 1500 हैं, कम्पनी अधिकारी तथा ठेकेदार 5000 रुपये प्रति मजदूर प्रति माह आपस में बाँट रहे हैं। दस वर्ष से चल रही फैक्ट्री में कुछ मजदूरों को वर्दी देते हैं पर उसके 200 रुपये काटते हैं जबकि वह 50-60 रुपये की होती है। हार्ड काम है, दस्ताने एक दिन में ही कट जाते हैं पर हफ्ते में दो बार ही देते हैं और वह भी....... वह दस्ताने भी अन्य फैक्ट्री में इस्तेमाल किये हुये, यहाँ धुलवा कर दे देते हैं, कन्डम दस्तानों के कारण हाथों में छाले पड़ जाते हैं। चर्चा है कि दस्तानों का यह खेल जनरल मैनेजर का है। ए, बी, सी करके 600, 900, 1100 रुपये वार्षिक वेतन वृद्धि की बात है पर 2013 और 2014 में यह वृद्धि कम्पनी ने की ही नहीं — जनवरी 2013 से लगे मजदूरों की तनखा 5813 रुपये ही और बाकी की भी जनवरी 2013 के स्तर पर ही......

'' बिना किसी वेतन वृद्धि के इस वर्ष का मई माह भी निकल रहा था तब मजदूरों ने गूँगी बैठक की। फैक्ट्री में कर्ता-धर्ता मैनेजर बत्रा ने 15 दिन में वेतन वृद्धि की बात कही तब गूँगी बैठक समाप्त हुई।

'' 13/6 मथुरा रोड़ वाली फैक्ट्री में मजदूर गूँगी बैठक करते रहे हैं। गूँगी बैठक आमतौर पर 3 बजे की टी-ब्रेक में होती है। पहले आपस में चर्चायें हो जाती हैं। जब सब का हित होता है तब गूँगी बैठक होती है। हौज कटिंग, असेम्बली, क्वालिटी, टैस्टिंग, पैकिंग, डिस्पैच, लोडिंग, बफिंग, वैल्डिंग, ब्रेजिंग, बैन्डिंग, स्टोर,डेवलेपमेन्ट वाले, यानी, सभी लाइनों के मजदूर आते हैं तभी गूँगी बैठक होती है। चाय 3 रुपये की है, आमतौर पर चाय पीने वाले ही कैन्टीन जाते हैं। जब गूँगी बैठक होती है तब सब मजदूर कैन्टीन पहुँचते हैं। एक सौ महिला मजदूरों और पुरुष मजदूरों की कैन्टीन अगल-बगल में हैं। महिला दिन की शिफ्ट में ही हैं, गूँगी बैठक में महिला मजदूर भी शामिल होती हैं। दस मिनट का टी-ब्रेक समाप्त होने पर महिला और पुरुष मजदूर कैन्टीनों से नहीं निकलते। सवा तीन तक सुपरवाइजर, एच आर मैनेजर, प्रोडक्शन मैनेजर कैन्टीनों में पहुँच जाते हैं। यह साहब पूछते हैं, कहते हैं पर मजदूर उनकी बातों का कोई उत्तर नहीं देते। इन साहबों के लिये मजदूर गूँगे बन जाते हैं। गूँगी बैठक के दौरान मजदूर आपस में खूब बातें करते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, अच्छा-खासा शोर-शराबा होता है .... और साहबों के लिये स्त्री-पुरुष मजदूर गूँगे बने रहते हैं। कम्पनी के कर्ता-धर्ता अधिकारी के कैंटीन पहुँचने और हस्तक्षेप पर ही मजदूर गूँगी बैठक समाप्त करते हैं।

'' 2013 और 2014 में मजदूर गूँगी बैठक नहीं कर पाये। उस दौरान कुछ तो काम डाउन था और कम्पनी ने कुछ पुराने मजदूर नौकरी से निकाले भी थे। गूँगी बैठक करना ज्यादा आसान भी नहीं है क्योंकि गूँगी बैठक सब मजदूरों के इक्ट्ठा होने से ही होती है। इससे पहले 2012 में हम ने गूँगी बैठक की थी तभी कम्पनी ने 2012 की वार्षिक वेतन वृद्धि की थी। एक गूँगी बैठक तो ओवर टाइम पर हुई थी। मात्र 8 रुपये प्रति घण्टा ओवर टाइम के देते थे तब गूँगी बैठक हुई थी और कम्पनी ने 10 रुपये प्रति घण्टा किये थे।

'' 15 दिन में वेतन वृद्धि 25 दिन बीतने पर भी नहीं हुई। तब मजदूरों ने फिर कदम उठाया। मजदूरों ने 25 जून को ओवर टाइम पर रुकने से इनकार कर दिया। एच आर मैनेजर ने 25-30 मजदूरों को बताया कि अगस्त में पैसे मिलेंगे। और जून के पैसे? साहब के यह कहने पर कि जून की बजाय जुलाई से पैसे मिलेंगे, मजदूर फैक्ट्री से निकलने लगे तब जनरल मैनेजर ने हस्तक्षेप किया और जून का एरियर देने की बात की।''

केन्द्रीय विद्यालय

फरीदाबाद में एन एच 4 में तीन केन्द्रीय विद्यालय हैं। एवन सेक्युरिटी और फोरगेट सेक्युरिटी सर्विस में 12-12 घण्टे की शिफ्टों में गार्ड की ड्युटी करने के बाद मैं शिवम् सेक्युरिटी सर्विस की तरफ से केन्द्रीय विद्यालय नम्बर दो में गार्ड लगा। यहाँ 8 घण्टे की ड्युटी थी। सुबह 7 से दोपहर 3 तक दो गार्ड और फिर 3 से 11 तथा 11 से 7 के लिये एक-एक गार्ड। बच्चों को बाहर नहीं जाने देना; गेट बन्द रखना और स्टाफ के लिये खोल देना; बाहर से मिलने आने वालों की रजिस्टर में इन्ट्री करना; क्लास समाप्ति पर कमरों के ताले लगाना; पानी के लिये मोटर चलाना। गार्डों की रविवार की भी ड्युटी। प्रतिदिन 8 घण्टे पर 30-31 दिन के 5000 रुपये। सफाई कर्मचारी और माली की रविवार को छुट्टी, उन्हें 8 घण्टे रोज ड्युटी पर 26 दिन के 5000 रुपये। चर्चा से पता चला कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन से प्रत्येक गार्ड व सफाईकर्मी के लिये महीने के 11,000 रुपये आते हैं। केन्द्रीय विद्यालय अधिकारी तथा ठेकेदार मिल-बाँट कर मजदूरों के पैसे खाते हैं। मई-आरम्भ में स्टाफ की एक महिला ने मुझे उसकी स्कूटी साफ करने को कहा तो '' मेरा काम नहीं है '' कह कर मैंने मना कर दिया। इस पर ठेकेदार पर महीने-भर दबाव डाल कर मैडम ने 23 जून को मुझे नौकरी से निकलवा दिया।

हुबरसुन्नर मजदूर : '' प्लॉट 125 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 30 टीम लीडर, 20 इंजीनियर और एच आर वाले ही स्थाई हैं — 700 से ज्यादा मजदूर दो ठेकेदार कम्पनियों, ब्लैक एंगल और जीनियस के खातों में हैं। नियम सवा दस घण्टे ड्युटी, शनिवार व रविवार अवकाश जबकि व्यवहार में सवा बारह घण्टे ड्युटी, सातों दिन.

प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग

वाहनों के स्टीयरिंग व्हील व अन्य हिस्से-पुर्जे बनाती, 1991 में दिल्ली में स्थापित कम्पनी की आज गुड़गाँव, चेन्नई, बद्दी, धारूहेड़ा में फैक्ट्रियाँ हैं। वैश्विक स्तर की तकनीकी कम्पनी ने टोयोडा गोसेइ (जापान), मोलटैक्स (कोरिया) और डेल्फी मैटल (एस्पान एस. ए.) से ली है। कम्पनी के ग्राहक हैं : मारुति सुजुकी, ह्युन्दई, टाटा मोटर, फियेट, महिन्द्रा, फोर्ड, होण्डा, हिन्दुस्तान मोटर, अशोक लेलैण्ड, टोयोटा किर्लोस्कर, एल एण्ड टी, आयशर, सोनालिका, टैफे, स्वराज माजदा, मावल, कुबोटा, कैटरपिलर, पियाजिओ। प्रिमियर कम्पनी के अनुसार वरकरों की सँख्या 101 से 500 है और वार्षिक कारोबार 50 से 100 करोड़ रुपये का।

गुड़गाँव में उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 185 स्थित प्रिमियम मोल्डिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्ट्री के मजदूरों के अनुभव, विचार, कदम महत्वपूर्ण हैं। संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत हैं।

12-12 घण्टे की दो शिफ्टों वाली फैक्ट्री में ओवर टाइम का भुगतान 6 रुपये प्रति घण्टा हैल्परों को और 8 रुपये प्रति घण्टा ऑपरेटरों को देना कम्पनी की विशेषता रही है। इधर वर्ष-भर से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और 7 माह से ओवर टाइम बन्द है। वर्ष 2013 में दिवाली पर बोनस 8400 रुपये के संग उपहार था पर 2014 में दिवाली पर मात्र 2000 रुपये दे कर बोले कि दुबारा जनवरी में देंगे।

जनवरी में कम्पनी 4 मोल्डिंग मशीनें हटा कर धारूहेड़ा फैक्ट्री ले जाने लगी तो मजदूरों ने ऐतराज किया। बड़े साहब ने हाथ जोड़े। उन 4 मशीनों पर काम करते 10 मजदूरों को एक हफ्ते की छुट्टी दी और वे वापस आये तो उन्हें ड्युटी पर नहीं लिया। श्रम विभाग में शिकायत पर तारीख-तारीख-तारीख।

मार्च में कम्पनी नया एच आर मैनेजर लाई। यह साहब आते ही डराने-धमकाने लगे, मजदूरों को अपने खर्चे पर धारूहेड़ा काम करने को कहने लगे। मजदूरों ने और मशीनें हटाने तथा नौकरी से निकाले जाने के खिलाफ सहायता के लिये वकील किया। वकील ने न्यायालय से स्टे मिल गया है की बात की। कम्पनी ने अप्रैल-मई के दौरान आठ-दस वर्ष से काम कर रहे 50 अस्थाई मजदूर हेराफेरी से नौकरी से निकाल दिये।

6 जून को साँय कम्पनी ने 8 व 9 जून को छुट्टी का नोटिस लगाया। कारण? मारुति सुजकी में 7 से 14 जून मेन्टेनैन्स शट डाउन को कारण बताया जबकि 25 वर्ष में एक बार भी ऐसी छुट्टी नहीं दी थी। चौकस तो मजदूर थे ही, और चौकन्ने भी हो गये।

रविवार, 7 जून को रात दस बजे आठ गाड़ियों में बाउन्सरों और थानेदार के साथ मैनेजमेन्ट फैक्ट्री पहुँची। कापसहेड़ा में रह रहे प्रिमियम मोल्डिंग के 35 मजदूर तत्काल फैक्ट्री पहुँचे। मशीनें निकालने से रोकते मजदूर बाउन्सरों से भिड़े और थानेदार को अदालत द्वारा स्टे की बात बताई। थानेदार ने मशीनों के निकालने पर स्टे की बात नहीं मानी और मजदूरों को फैक्ट्री से जाने को कहा। अगले दिन, 8 जून को मजदूर पुलिस कमिश्नर से मिले तब उन साहब ने भी न्यायालय से ऐसे स्टे की बात से इनकार किया। पुलिस के संरक्षण में बाउन्सरों की मदद से मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री से मशीनें निकाल कर धारूहेड़ा भेजना जारी रखा। वकील ने मशीनें निकालने के खिलाफ स्टे लिया ही नहीं था, मजदूरों को नौकरी से निकालने के खिलाफ ही स्टे लिया था। कम्पनी आवश्यक मशीनें धारूहेड़ा ले गई। बचे-खुचे कबाड़े को निकालने से रोकने के लिये वकील 2 जुलाई को स्टे के लिये आवेदन कर रहा था......

कम्पनी द्वारा घोषित अवकाश के बाद, 10 जून को मजदूर ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँचे तो उन्हें इन्तजार करने को कहा। फिर कम्पनी ने 14 मजदूरों का तमिल नाडु ट्रान्सफर का नोटिस गेट पर चिपका दिया। इस ट्रान्सफर का मजदूरों ने विरोध किया। इस प्रकार स्थाई व अस्थाई, सब 200 मजदूर 10 जून से फैक्ट्री के बाहर। सहायक श्रम आयुक्त ने कम्पनी-पक्ष में इसे मजदूरों द्वारा हड़ताल करार दिया है। न्यायालय ने कम्पनी-पक्ष में मजदूरों को फैक्ट्री गेट से 25 मीटर दूर रहने का आदेश दिया है — एक-दूसरे से सटी फैक्ट्रियों के इस दौर में प्रिमियम मोल्डिंग के मजदूर 10 जून के बाद से अन्य फैक्ट्री के पास एकत्र हो रहे हैं।

दबाव बढाने के लिये कम्पनी ने मई की तनखा नहीं दी। श्रम विभाग में शिकायत पर : 22 जून को देंगे — नहीं दी; 26 जून को देंगे — नहीं दी और मई में एक दिन की हड़ताल पर 8 दिन के पैसे काटने की बात की ; 1 जुलाई को देंगे — स्थाई को 8 दिन के पैसे काट कर चैक देने लगे तो स्थाई मजदूरों ने पहले अस्थाई मजूदरों को पैसे देने को कहा जिस पर 2 जुलाई का दिन तय हुआ।

इधर प्रिमियम मोल्डिंग मजदूरों ने एक यूनियन से सम्पर्क भी किया। लेकिन ईस्टर्न मेडिकिट के स्थाई मजदूरों, बजाज मोटर के स्थाई व अस्थाई मजदूरों, ऑटो लिव के स्थाई व अस्थाई मजदूरों, बैक्सटर के स्थाई मजदूरों, अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स के अस्थाई मजदूरों, मुंजाल किरियु के स्थाई मजदूरों के अनुभव उनके सम्मुख हैं : श्रम विभाग में तारीख-तारीख-तारीख, न्यायालय में तारीख-तारीख-तारीख, अफसर-नेता-मन्त्री के आश्वासन-आश्वासन-आश्वासन, महीना-बीस दिन में प्रदर्शन-सभा में लीडरों के भाषण, हताशा में भूख हड़ताल...... थकाने वाली यह राहें मजदूरों पर कम्पनियों की शर्तें थोपने का जरिया रही हैं।

इस सब को ध्यान में रखते हुये प्रिमियम मोल्डिंग के मजदूरों ने उद्योग विहार की हजारों फैक्ट्रियों में काम करते मजदूरों से तालमेल की राह पर कदम बढाये हैं। पहले-पहल कुछ झिझक के बाद, 4 जुलाई को सुबह की शिफ्टों के समय गत्तों पर अपनी बातें लिख कर यह मजदूर उद्योग विहार में पीर बाबा रोड़ पर खड़े हुये हैं। उत्साह। एक फैक्ट्री के मजदूरों की बातें हजारों फैक्ट्रियों में आरम्भ हुई हैं। प्रिमियम मोल्डिंग मजदूरों ने सोमवार, 6 जुलाई से हर रोज गत्तों पर अपनी बातें लिख कर उद्योग विहार में मजदूरों के बीच सुबह की शिफ्ट के समय जाना तय किया है। यह मजदूर-पक्ष को आकार देने वाला कदम है। मजदूर-पक्ष का ठोस आकार लेते जाना कारगर लगता है कम्पनी-पक्ष को पीछे हटाने को मजबूर करने में।

✶ अपने अनुभव व विचार मजदूर समाचार में छपवा कर चर्चाओं को और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दें।

✶ महीने में एक बार छापते हैं, 13,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। चर्चाओं के लिए समय निकालें।

निमंत्रण

जुलाई में 26 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुए रास्ता है। ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

Ph. 0129-6567014

E-mail < majdoorsamachartalmel@gmail.com >

E-mail < baatein1@yahoo.co.uk >

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/15-17